ओ३म्

महत्वपूर्ण निवेदन

यदि ईश्वर व धर्म, विज्ञान का नहीं बल्कि केवल अपनी-२ आस्थाओं के ही प्रतीक हैं, तब ऐसे ईश्वर व धर्म को मानने की क्या आवश्यकता है, जो मानव को आपस में बांटते व लड़ाते हैं?

यदि वास्तव में ईश्वर का अस्तित्व व उसका सत्य वैज्ञानिक स्वरूप है, तब वे मनुष्यों की भावनानुसार पृथक्-२ रूप में कदापि नहीं हो सकते।

तब क्या हम सबको ऐसे एक यथार्थ ईश्वर व वैज्ञानिक धर्म के स्वरूप पर खुला व मैत्रीपूर्ण संवाद करके मानव जाति को एक सूत्र में बांधने का प्रयास नहीं करना चाहिए?

आइये! इसी विषय पर निष्पक्ष व तार्किक चिन्तन के लिए इस पुस्तिका को हृदय की गहराइयों व उच्च प्रज्ञावान् मस्तिष्क से पढ़ें व मनन करें।

मिथ्या आस्थाओं व अंधविश्वासों से उत्पन्न कथित धर्मों की भीड़ तथा भोगवादी विज्ञान व तकनीक ने सम्पूर्ण भूमण्डल में अशान्ति फैला रखी है। आओ, इन दोनों को ही सन्मार्ग पर लाने का प्रयास करें।
आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

प्रत्येक वेदभक्त, देशभक्त, मानवतावादी एवं विज्ञान प्रेमी के हृदय, मस्तिष्क व आत्मा तक झंकृत करने वाला महत्वपूर्ण लेख। आओ चलें,

वैज्ञानिक धर्म एवं धार्मिक विज्ञान की ओर

मेरे आदरणीय मित्र महानुभाव! यह स्वभाव प्रत्येक प्राणी का होता है कि वह दुःख से बचना तथा सुख को पाना चाहता है। फिर भला सृष्टि का सर्वोत्कृष्ट प्राणी मनुष्य क्यों नहीं सुख प्राप्ति हेतु पूर्ण पुरुषार्थ करेगा? आज संसार भर के प्रबुद्ध मनुष्य चाहे वे किसी भी उत्तरदायित्वपूर्ण पद पर आसीन हों, संसार को सुखी बनाने का यत्न अपने-अपने ढ़ंग से करते प्रतीत हो रहे हैं। संसार के संविधान, धर्माचार्य, सामाजिक संस्थाएँ, विकसित होता विज्ञान, अर्थशास्त्री, शिक्षा-शास्त्री आदि सभी इसके लिए प्रयत्नशील हैं कि मनुष्य सुखी होवे परन्तु इसके उपरान्त भी आज सम्पूर्ण विश्व अशांति, आतंक, हिंसा, घृणा, मिथ्या, छल-कपट, ईर्ष्या, राग, द्वेष से ग्रस्त होकर अति दुःखी व अशांत है। धनी, निर्धन, बली-निर्बल वा विद्वान्-मूर्ख सभी अशांत हैं। तब विचार होता है कि क्या कारण है कि चिकित्सा करते रहने पर भी रोग बढ़ता ही जा रहा है। मेरा मानना है कि इस सब का मूल कारण सत्य और वास्तविकता से अनभिज्ञ रहना अथवा जानकर भी उसके अनुकूल व्यवहार न करना ही है। आज सारे संसार में विकास की प्रतिस्पर्धा हो रही है। हम दूसरे को छल गिराकर उससे आगे जाना चाहते हैं। दूसरे की झोंपड़ियाँ जलाकर अपने भव्य भवन बनाना चाहते हैं, दूसरे की थाली से सूखी रोटियां भी छीनकर स्वयं सुस्वादु सरस भोजन करना चाहते हैं, दूसरों के तन के जीर्ण-शीर्ण वस्त्र भी खींचकर स्वयं बहुमूल्य वस्त्र पहनकर फैशन करना चाहते हैं, तथा दूसरों का गला घोंटकर स्वयं एकाकी अमर जीवन जीना चाहते हैं। क्या ऐसा विकास हमारी शांति का विनाशक नहीं है? मानवीय-आत्मा का हनन करने वाला नहीं है? हमें विचारना होगा कि विज्ञान ने हमें अनेकों सुख सुविधाऐं प्रदान की परन्तु क्या हम सुखी व सन्तुष्ट हुए? क्या दया, करुणा, मैत्रीभाव, भाईचारा, ईमानदारी, सच्चाई जैसे मानवीय मूल्यों को यह अंधाधुंध विकास की आंधी ने नष्ट-भ्रष्ट नहीं कर दिया है? जिस मनुष्य के लिए इन संसाधनों का विकास हो रहा है, वह मनुष्य अन्तःकरण एवं आत्मा से कितना विकसित हुआ है? उसका हृदय कितना विशाल व उदात्त हुआ है? उसका मस्तिष्क कितना सत्यासत्य विवेकी व न्यायप्रिय हुआ है? क्या आज किसी के पास यह सोचने का समय वा इच्छा है? मेरे प्यारे मित्रो। जरा सोचिए। इसका दोष विज्ञान को तो नहीं दिया जा सकता। विज्ञान तो साधन है, साधन स्वयं में अच्छा वा बुरा नहीं होता, बल्कि उसके उपयोगकर्ता पर निर्भर है कि साधन से अच्छा कार्य करे वा बुरा। उपयोगकर्ता की मनोवृतियां ही अच्छे व बुरे के लिए उत्तरादायी हैं। अब प्रश्न उठता है कि मनुष्य की पतनोन्मुखी वृत्तियों का परिष्कार कौन करे? तब हमारा ध्यान सहसा ही धर्म की ओर जाता है परन्तु आज संसार में देखें तो अनेक परस्पर विरुद्ध विचार वाले मत मतान्तर धर्म का रूप धारण करके मानव को सुधारने का प्रयत्न करते दिखाई दे रहे हैं और वास्तविकता यह है कि मानव इसमें फँसकर

अंधविश्वास, रूढ़िवाद, अविद्या, दुराग्रह, पारस्परिक घृणा, हिंसा की ओर बढ़ता रहा है एवं बढ़ रहा है। धर्म के नाम पर जितना रक्तपात होता आया है, सम्भवतः उतना किसी अन्य कारण से नहीं हुआ हो। आज भी यह पाप जारी है। आज के वैज्ञानिक युग में भी धर्म के नाम इतनी हिंसा, कट्टरता, द्वेष व असहिष्णुता है, जिसकी कल्पना से ही हृदय विदीर्ण होता है। आज गौ नामक महोपकारी पशु, गंगा नदी, तुलसी, पीपल आदि वृक्ष तो साम्प्रदायिक हो ही गये, अब तो सूर्य, चन्द्र, तारों व भगवे, हरे रंग एवं व्यायाम-प्राणायाम भी साम्प्रदायिक रंग में रंग दिए गये हैं। आज यदि कुछ अतिवादियों का सामर्थ्य होवे तो उगते सूर्य व आग की ज्वालाओं को भी हरा बना दें तथा यदि कुछ अन्य अति कट्टर वादियों का वश चले तो समस्त वनस्पति जगत् का हरा रंग भी नष्ट कर दें। आज समस्त ज्ञान-विज्ञान का मूल स्रोत वेद वा भारतीय प्राचीन महापुरुष इस सम्प्रदायिक द्वेष के शिकार हो रहे हैं। आज धर्म ने बड़ा भयंकर विनाशक रूप धारण कर रखा है। इस पाप के लिए सभी दोषी हैं, कोई न्यून तो कोई अधिक। इस तमोमयी निशा में स्वार्थान्ध कथित धर्मगुरु इस नादान मानव जाति को परस्पर लड़ाकर नष्ट करके अपने-२ स्वार्थों को साध रहे हैं। नित नये-२ ढंग से एक दूसरे पर बौद्धिक आक्रमण कर रहे हैं, तो राजनेता वा सामाजिक कार्यकर्ता कहाने वाले बिना सत्य का अनुसंधान किये अज्ञानमूलक तुष्टीकरण करके सत्यासत्य विवाद पर मूकदर्शक बने हैं। कहीं लिंग भेद, भाषा, क्षेत्र, ग्रामीण, नगरीय आदि आधार पर संघर्ष हो रहे हैं, तो कहीं निर्धन व धनी के बीच खाई खोदी जा रही है। कहीं जातिवाद व छूआछूत का अजगर इस राष्ट्र व विश्व को निगलने का प्रयास कर रहा है। इन सबके पीछे कहीं न कहीं कुछ न कुछ कथित धर्म की भूमिका अवश्य है।

मित्रो! क्या कभी आपने विचार किया है कि यह सब क्या हो रहा है? क्या मानव का यही कर्तव्य है? क्या इसे ही धर्म कहेंगे? मैं जब इस पर विचारता हूँ तो प्रतीत होता है कि केवल विश्वास के आधार पर टिके मत-मतान्तरों का होना ही मानव जाति के लिए घातक है। आज जिसे भी इच्छा हो अपनी मिथ्या आस्था के आधार पर अपना पंथ चला कर नादान मनुष्यों को अपना अनुगामी बनाकर ठग सकता है। वह शासन से अपने मत के अल्पसंख्यक होने का दावा करके स्वेच्छया मांग भी रख सकता है। वोट के लोभी शासक सेक्यूलरिज्म के नाम पर उसे भी अपनी अंध आस्थाओं को प्रचारित करने का अवसर दे देता है। विज्ञान के ठेकेदार बनने वालों ने भी ऐसी अज्ञानता का ताण्डव मचा रखा है। इससे सत्य धर्म लुप्त हो रहा है। उधर कोई-२ धर्म व संस्कृति को ही उखाड़ फैंकने का आह्वान करते हैं। इस अनिष्ट फल से बचने के लिए धर्म (जो केवल एक ही हो सकता है, जबकि मत-पंथ अनेक हो सकते हैं) को सच्चे स्वरूप में समझना होगा। ऐसा तब हो सकेगा जब इसे विज्ञान के साथ पूर्णतः जोड़ दिया जायेगा। तब धर्म पर आस्था रखने वाले उसी प्रकार एकमत हो सकेंगे, जिस प्रकार भौतिकी, रसायन-विज्ञान, गणित, खगोलिकी, जीव-विज्ञान, कृषि विज्ञान, आयुर्विज्ञान आदि विषयों में संसार के सभी मनुष्य एक मत हैं। इन भौतिक विद्याओं के कारण संसार में न कभी अलगाववाद पनपा और न रक्तपात ही हुआ। ध्यान रहे कि केवल आस्था व विश्वास से सत्य का निर्णय कभी नहीं हो सकता। आस्था व विश्वास परस्पर टकरायेंगे ही, जबकि सत्य कभी नहीं टकराता। इस संसार में मिथ्या आस्था-विश्वास-जन्य मतों ने खूनी खेल खेले हैं व खेल रहे हैं, परन्तु सत्य कभी किसी का खून नहीं लेता। आस्थायें मानव जाति को बांटती हैं, जबकि सत्य मानव को जोड़ता है। आश्चर्य है कि छोटी-२ बातों में विज्ञान व तर्क की वकालत करने वाले धर्म विषय में क्यों ऐसा नहीं करते? मुझे आश्चर्य व दुःख है कि दुःखनाशक व सुखमूलक धर्म के नाम पर यह पाप क्यों? आध्यात्मिकता के नाम पर ईर्ष्या, द्वेष, हिंसा क्यों? मेरे जागरूक मित्रो! हमें धर्म का एक ऐसा सच्चा स्वरूप संसार के सम्मुख लाने का प्रयास करना होगा, जिसमें पाखण्ड, अंधविश्वास, अवैज्ञानिकता, पूर्वाग्रह, रूढ़िवाद, अमानवीयता, पक्षपात व असत्य का कोई स्थान नहीं हो। जो देश, काल व परिस्थितियों की सीमाओं से परे शाश्वत व सार्वदेशिक हो। जो मानव ही नहीं अपितु प्राणिमात्र के लिए सदैव हितकर हो। यही विचार संसार के आद्य ऋषि ब्रह्मा से लेकर ऋषि दयानन्द पर्यन्त का रहा है। धर्म के नाम पर अलगाववाद का पाठ पढ़ाने वाले सत्य-तर्क-विज्ञान के नाम से भयभीत होकर दूर भागने वाले धर्मप्रचारकों, आचार्यों, साधु-सन्तों, पंडितों, मौलवियों, पादरियों, ग्रंथियों आदि सभी मान्य महानुभावों को अपने-अपने हठ, दुराग्रह, पूर्वाग्रह पद-प्रतिष्ठा धन की लालसा को त्याग कर विज्ञान-बुद्धि से सोचने का साहस जुटाना होगा। उन सभी महानुभावों को विचारना होगा कि जब हम परमात्मा के बनाये भौतिक नियम विज्ञानादि पर एकमत हो सकते हैं। इन विषयों को साथ-साथ मिल बैठकर पढ़-पढ़ा सकते हैं और ऐसा करते हुए भौतिक उन्नति कर सकते हैं, तब इसी भाँति परमात्मा के ही बनाये आध्यात्मिक नियमों में परस्पर भेद क्यों स्वीकार करते व बढ़ाते हैं? आज नये-नये मत जन्म लेकर अपने को सच्चा धर्म बताने का दावा कर रहे हैं, तो आमजन ही नहीं अपितु अत्युच्च शिक्षित महानुभाव यहाँ तक वैज्ञानिकों का भी धर्म विषयक विशेष अध्ययन

व चिन्तन नहीं होता, इससे वे भी भय या लोभ के वशीभूत अथवा भीड़ को देखकर मत-पंथों के दलदल में फँस जाते हैं। **बड़े-बड़े राजनेता, समाजशास्त्री, पत्रकार, संविधानवेत्ता व साहित्यकार भी धर्म विषय में नितान्त मूढ़ बन सत्यासत्य विवेक बिना ही एकता का मिथ्या पाठ पढ़ाते हैं। कोई यह विचारने का यत्न नहीं करता कि सत्य का आधार न तो भारी भीड़ होती है, और न ही लोभ या भय से उत्पन्न कोई फलाकांक्षा की पूर्ति हो जाना। सत्य निर्णय वैज्ञानिक बुद्धिजन्य तर्क, प्रमाण व तथ्यों के आधार पर तथा गहन, मनन, चिन्तन व निर्मल निष्पक्ष निःस्वार्थ हृदय से ही हो सकता है, जो आज दुर्लभ हो गया है।** हम यह भी विचारने का प्रयत्न नहीं करते कि हम धर्माचार्य सत्य, न्याय, निःस्वार्थ, निष्कपटता की बात करते अवश्य हैं, परन्तु अपने-अपने मत की न्यूनताओं को जानते हुए भी दुराग्रही बने रहते हैं तथा अपने मत के दोष बतलाने वाले के प्राणघातक भी बन बैठते हैं। तब सत्य ग्रहण की तो बात ही क्या कहें? उधर जो वैज्ञानिक सत्य, न्याय, पक्षपातरहितता, अध्यात्म, निर्मलता, नैतिकता की लेशमात्र भी चर्चा नहीं करते, वे सत्य के ग्रहण तथा असत्य के परित्याग के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। कोई वैज्ञानिक जिसे धर्माचार्य भले ही नास्तिक कह दें, अपने जीवन भर के पुरुषार्थ से खोजे गये किसी सिद्धान्त को किसी अन्य वैज्ञानिक द्वारा असिद्ध होते जान लेता है, तब वह तत्काल अपनी भूल को स्वीकार कर नवीन सिद्धान्त को अपना लेता है। जिस बात को वैज्ञानिक नहीं जानता तो तत्काल अपनी कमी स्वीकार कर लेता है। कभी अतिशयोक्ति में बात नहीं करता। अहा! कैसा अनूठा आदर्श वे हम धर्माचार्य कहाने वालों के लिए प्रस्तुत करते हैं। **ऐसे धर्म को धिक्कार है, जो हमें सत्य की ओर जाने से रोके।** क्या हमें यही नहीं सोचना चाहिए कि हमें सत्यासत्य विवेक के क्षेत्र में सबसे अधिक उदार व विशाल हृदय होना चाहिए क्योंकि सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं होता। **मैं विचारता हूँ कि जिस दिन विश्व भर के धर्माचार्य पूर्ण निष्पक्ष एवं वैज्ञानिक बुद्धि से युक्त होकर सत्य का ग्रहण व असत्य का परित्याग करने का सत्साहस करेंगे, उस दिन संपूर्ण भूमण्डल पर एक सत्य धर्म का शासन होगा, एक ईश्वर (वह ईश्वर विशुद्ध वैज्ञानिक युक्तियों से भी सर्वथा सिद्ध करने योग्य है तथा जिसका स्वरूप भी सर्वथा वैज्ञानिक है। शोक है कि आज इस महान् तथा सर्वाधिक गम्भीर विज्ञान को कथित आस्थाओं वा कथित सैक्यूलरिज्म वा प्रबुद्धता के कोलाहल में भुला दिया गया है। इस एक ध्रुव वैज्ञानिक सत्य को सहस्रों रूपों में कल्पित करके मानवता को खण्ड-२ कर दिया है। इस विषय में हमारी वेबसाइट पर ''ईश्वर अस्तित्व एवं स्वरूप की वैज्ञानिकता'' वीडियो देख सकते हैं) की पूजा होगी।** साम्प्रदायिक हिंसा, वर्गसंघर्ष, देशसंघर्ष आदि समाप्त होकर सारा विश्व परमपिता परमात्मा का एक परिवार बनने की दिशा में अग्रसर होगा परन्तु इसके लिए हमारे आधुनिक वैज्ञानिकों को भी यह सोचना होगा कि विज्ञान को तकनीक से कहाँ तक जोड़ना उचित व आवश्यक है, जिससे मानव व्यर्थ की स्पर्धा में फँसकर सर्वविध असंतोष में जलता हुआ चिन्ता, अवसाद, ईर्ष्या-द्वेष से ग्रसित होकर दुःखों से पीड़ित न होता रहे। पर्यावरण नष्ट भ्रष्ट होकर जीवों की प्रजातियां तक लुप्त न होती रहें। नये-नये रोग तथा जलवायु का संकट न बढ़ता रहे। और इन सबके कारण संसार में भंयकर असंतोष, संघर्ष, कृत्रिम अभाव, आतंकवाद का जन्म न होता रहे। इस हेतु विज्ञान को भी सत्य धर्म से जुड़ना होगा। ऐसा करने से विज्ञान उपर्युक्त समस्याओं का जनक नहीं बनकर धर्म के साथ मिलकर मानवीय मूल्यों का संरक्षक बनेगा। पर्यावरण शुद्ध व सुरक्षित रहेगा। इसके लिए वैज्ञानिकों, समाजशास्त्रियों, साम्यवादियों, अर्थचिन्तकों व राजनेताओं को अपना दृष्टिकोण बदलने का साहस करना होगा। धर्म को नशा न मानकर सत्याचरण पर आधारित मानवीय मूल्यों का संरक्षक मानना होगा। धर्म को विश्वास की कल्पित वस्तु मानने के स्थान पर वैज्ञानिक सत्य पर सिद्ध मानना होगा। जिस दिन विज्ञान ऐसे सत्य धर्म को साथ लेकर अनुसंधान करेगा तब सारा विश्व भोगवाद की स्पर्धा को विकास नाम से सम्बोधित नहीं करके त्यागवाद में संतुष्ट रहकर आवश्यक, उपयोगी तथा निरापद आविष्कार ही करेगा। इससे न तो प्राकृतिक संसाधनों की न्यूनता होगी और न ही कृत्रिम अभाव एवं सामाजिक असमानताजन्य, अशान्ति व असन्तोष पनपेगा। **इन पंक्तियों का लेखक व्यर्थ शोर मचाने वाले कथित प्रबुद्धों वा कथित सामाजिक कार्यकर्ताओं को तो नहीं परन्तु वर्तमान शीर्ष वैज्ञानिकों को हमारी ईश्वर व धर्म विषयक अवधारणा को वैज्ञानिक कसौटी पर परखने का खुला आमन्त्रण देता है, साथ ही वर्तमान विज्ञान की कुछ प्रसिद्ध धारणाओं को भी सत्य की कसौटी पर परखने हेतु वैज्ञानिकों के साथ संवाद की भी इच्छा रखता है। आयें, हम दोनों ही पक्ष परस्पर संवाद करके सत्य का पता लगाकर इस मानव जाति को बचाने व सुखद समाज बनाने का प्रयास करें।**

इस प्रकार के सुखद समाज को बनाने की भावना ऋषियों की सदैव से रही है। ऋषि दयानन्दजी तो परमाणु से लेकर परमेश्वर तक का यथार्थ ज्ञान व उससे अपना व दूसरों का उपकार करना ही विद्वानों का कर्तव्य बताते हैं। पूर्वकालीन ऋषि, देवगणों में ब्रह्मा,मनु, भृगु, नारद, सनत्कुमार, मार्कण्डेय अगस्त्य, भरद्वाज, अत्रि, यास्क, गौतम, कणाद, कपिल, व्यास पंतजलि,

याज्ञवल्क्य, बृहस्पति, महादेव-शिव, विष्णु, राम, कृष्ण आदि हजारों महापुरुषों तथा मध्यकालीनों में आर्यभट्ट, भास्कराचार्य, ब्रह्मगुप्त आदि की दृष्टि में सत्य धर्म तथा सच्चे विज्ञान का ऐसा ही आदर्श था जिस कारण तत्कालीन संसार में सुख-शान्ति का साम्राज्य था। उधर महान् विदेशी वैज्ञानिकों में सर अल्बर्ट आइंस्टाइन, सर आलीवर जोसेफ लॉज, प्रो.जान एमबोज फ्लेमिंग, प्रो. एडवर्ड हल, जान एलन हार्कर, प्रो.सिलवेनिस फिलिप्स आदि अनेक वैज्ञानिक विज्ञान व अध्यात्म के प्रबल समर्थक थे। मैं जब-जब सर आईस्टाइन के बारे में सुनता व जानता हूँ तब-तब मेरा मस्तक उस महान् व्यक्ति के सम्मुख आदर से झुक जाता है।

मित्रो! आज हमारे सम्मुख चुनौतीपूर्ण प्रश्न यह है कि आज जब विज्ञान व अध्यात्म दोनों अति दूर खड़े दिखाई दे रहे हैं, तब कैसे इन्हें साथ-साथ लाया जाये? मेरे मस्तिष्क व आत्मा ने विचारा कि क्यों न अपना जीवन इसी महान् मानवीय कार्य के लिए समर्पित किया जाये? सत्य, वेद, धर्म के संस्कार आर्य परिवार के वातावरण से मिले। मेरे आदर्श स्वरूप ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों से पोषण मिला। इस समय कुछ महान् वैज्ञानिकों व वैदिक विद्वानों का सद्भाव व सहयोग मिल रहा है। मैं आशा करता हूँ कि विश्व के अन्य प्रसिद्ध वैज्ञानिकों, दार्शनिकों, धर्माचार्यों व युवकों का भी ऐसा ही भाव मेरे प्रति बनेगा।

मेरे मित्र महानुभावो! मैंने अब तक तो वेद धर्म को सत्य धर्म की शर्तों पर स्वबुद्धि के अनुसार यथार्थ पाया है। इस कारण मैंने विचार किया है कि वैदिक वाङ्मय से विज्ञान के गूढ़ रहस्यों को खोजकर आधुनिक वैज्ञानिकों के समक्ष प्रस्तुत किया जाये, वे उस पर प्रयोगशालाओं में अनुसंधान करें तो उन्हें जहाँ समय की बचत होगी वहीं उन्हें अनुसंधान हेतु नये-नये क्षेत्र प्राप्त हो सकेंगे। इसके साथ ही वैदिक विज्ञान की प्रमाणिकता भी उनकी दृष्टि में बढ़ेगी। मैं यह अनुभव कर रहा हूँ कि वर्तमान विज्ञान कई बिन्दुओं पर अपने को असहाय अनुभव कर रहा है। **यदि कोई वेद के प्रति मेरी दृष्टि को मेरा पक्षपात माने तो उसे चाहिए कि वह जिसे अपना धर्म ग्रन्थ मानता है, उस पर गम्भीर अनुसंधान करके संसार के सम्मुख उसका सम्पूर्ण विज्ञान प्रकाशित करे। मैं संकल्पित हूँ कि असहाय विज्ञान को वैदिक वैज्ञानिक रहस्यों के द्वारा नई दिशा प्रदान करूँ।** मैं वेद को वर्तमान विज्ञान के पीछे नहीं बल्कि वर्तमान विज्ञान को वेद पीछे चलाने की भावना रखता हूँ और मुझे विश्वास है कि मैं ऐसा कर पाऊंगा। इससे उसकी श्रद्धा वेद की अन्य विद्याओं (यथा अध्यात्म, सामाजिक, राजनैतिक सिद्धान्त, यज्ञ, योग, गो विज्ञान, अर्थशास्त्र आदि) पर भी होगी। प्रबुद्धजनों को इस बात का भी अनुभव होगा कि वेद वा वैदिक साहित्य किसी देश या वर्ग के लिए ही नहीं अपितु विज्ञानादि की भाँति समस्त सृष्टि के लिए हितकारी हैं। संसार को धीरे-धीरे इस बात का भी ज्ञान होगा कि वेद किसी देश वा वर्ग विशेष की सम्पदा नहीं बल्कि सभी मानवों की साझा सम्पत्ति है। वेद उस काल का है, जब हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, जैन, बौद्ध, पारसी, ताओ, यहूदी, साम्यवादी, नास्तिक आदि वर्ग बने भी नहीं थे। तब समस्त भूमण्डल पर सभी केवल मानव ही कहलाते थे। उस समय देशों का प्रादुर्भाव भी वर्तमान रूप में नहीं हुआ था। यह वेद ही समस्त ज्ञान-विज्ञान का मूल है, ऐसा जिस दिन सिद्ध हो जायेगा तो मुझे कोई कारण प्रतीत नहीं होता कि कोई प्रबुद्ध मानव इसे स्वीकार न करे। **इससे बहुत आगे चल कर मैं वैदिक ऋचाओं को सृष्टि प्रक्रिया में उत्पन्न सूक्ष्म कम्पन (ऊर्जा) के रूप में सिद्ध कर सकूंगा।** मेरे बन्धुवर! जिस बात को मैं यहां कह रहा हूँ उसे सिद्ध करना ही मेरे जीवन का लक्ष्य है। मेरा जीवन विश्व भर के प्राणिमात्र के समग्र हित चिन्तन के लिए है, न कि किसी मत पंथ का प्रचार करना मेरा प्रयोजन है। इसके लिए मैं धर्म व विज्ञान दोनों को परस्पर मिलाने के प्रयत्न का दृढ़ व्रती हूँ। विज्ञान से तात्पर्य सर्वत्र तकनीकी ज्ञान भी मैं ग्रहण नहीं करता। मैं समझता हूँ कि बेरोक व अनावश्यक तकनीक मानव को आलसी, भोगवादी, गलाकाट-प्रतिस्पर्धी, अशांत व संघर्ष प्रिय बनाती है। मेरा ध्येय सृष्टि के गम्भीर व सूक्ष्म रहस्यों को जानकर महती चेतना परमात्मा की ओर वर्तमान विज्ञान को उन्मुख करना है। इससे मानव में आस्तिकता, दयाभाव, प्रेम, न्याय, सत्य आदि गुणों का उदय होगा। वह निरंकुश व स्वेच्छाचारी नहीं बनकर परमात्मा के आधीन चलेगा। इसी क्रम में परमाणु-नाभिकीय-कण-ब्रह्माण्ड-भौतिकी के गूढ़ तत्वों को वैदिक वाङ्मय से खोजना साथ-साथ आधुनिक विज्ञान की अवधारणाओं को समझना मेरी रुचि के विषय हैं। मेरी दृष्टि में उपर्युक्त विषय विज्ञान के सूक्ष्मतम विषय हैं, अन्य सभी विज्ञान इनसे किसी न किसी प्रकार जुड़े हुए हैं। मेरा दृढ़ मत है कि उपर्युक्त विषयों में आधुनिक विज्ञान, वैदिक विज्ञान से अनेकत्र नयी दिशा प्राप्त कर सकता है। बल, ऊर्जा व द्रव्यमान के रहस्यों को समझना भी इसी क्षेत्र का विषय होगा। इसके आगे अनेक उपयोगी तकनीकी विषय भी अनायास ही प्राप्त हो सकेंगे, ऐसी मैं सम्भावना करता हूँ। आधुनिक विज्ञान उपर्युक्त विषयों में क्या- क्या भूल कर रहा है? तथा वर्तमान व मध्यकालीन वैदिकों ने क्या-क्या भूलें वैदिक ज्ञान को समझने में की हैं, या कर रहे हैं,इसका भी पूर्ण अनुमान मेरे मस्तिष्क में हो रहा है, ऐसा विश्वास है। मुझे इस दिशा में कार्य

करते लगभग दस वर्ष ही व्यतीत हुये हैं। मैंने भारत के कई विश्व स्तरीय भौतिक वैज्ञानिकों की पर्याप्त संगति की है। विश्वभर में सृष्टि विज्ञान के क्षेत्र में हो रही प्रगति से भी निरन्तर अवगत होता रहता हूँ। उच्चस्तरीय वैज्ञानिक साहित्य भी पढ़ा है। सार यह है कि **वर्तमान विज्ञान अनेकत्र उलझनों में फंसा है, अनेकत्र असहाय प्रतीत होता है। उस असहाय व उलझे वर्तमान विज्ञान को सहायता देना मेरा उद्देश्य है।**

उधर वैदिक वाङ्मय के अध्येता भी ऐसे भटक रहे हैं,मानो अन्धा अन्धे को मार्ग बता रहा हो। वस्तुतः इनके मिथ्या ज्ञान व अन्ध परम्परा के कारण ही आज वेद व ऋषि-मुनियों के महान् ज्ञान विज्ञान का विनाश हो गया है। इन्हीं के कारण वेद व भारतीय वैदिक वाङ्मय साम्प्रदायिकता के कलंक से कलंकित हैं। मिथ्या कर्मकाण्ड, पाखण्ड, आडम्बर ने वैदिक विज्ञान को मानो विनष्ट कर दिया है। महर्षि दयानन्द का अनुगामी आर्य समाज भी अपने मार्ग से भटक कर एक सम्प्रदाय के रूप में दिखाई दे रहा है, जहाँ विद्या के स्थान पर यश, पद, प्रतिष्ठा की चाह रह गयी है। वेद का मार्ग भ्रान्त हो चुका है। अन्य मत-पन्थों की भाँति इसे भी आज पाखण्ड का व्यापार मात्र माना जा रहा है।

वैदिक वाङ्मय के अन्तर्गत मैं इस समय ऋग्वेद के ब्राह्मण (ऐतरेय ब्राह्मण) पर अपना वैज्ञानिक व्याख्यान लिख रहा हूँ। अब तक तीन चौथाई भाग से कुछ अधिक समाप्त हो गया है। इस रहस्यपूर्ण ग्रन्थ में अब तक प्रायः सभी भाष्यकारों ने इस ब्राह्मण ग्रन्थ में पशु बलि यज्ञादि कर्मकाण्ड आदि को ही पाया है परन्तु सम्पूर्ण संसार में सम्भवतः पिछले कुछ हजार वर्ष में मैंने ही इस ग्रन्थ की महती वैज्ञानिकता को समझने का प्रयास किया है। अब तक किये व्याख्यान से मैं अनुभव करता हूँ कि आधुनिक विकसित भौतिक विज्ञान को इस ग्रन्थ के द्वारा एक क्रान्तिकारी दिशा दी जा सकती है। जिन बिन्दुओं वा प्रश्नों का हल अब तक अध्ययन से मिलेगा, वे बिन्दु संक्षेप में निम्नानुसार हैं:-

(१) बल की अवधारणा जो आज अत्यन्त अस्पष्ट व अपूर्ण है। जिस पर प्रख्यात अमरीकी वैज्ञानिक रिचर्ड पी.फाइनमैन के डायग्राम्स को विश्वभर में अत्यन्त प्रामाणिक माना जाता है। मैं इस विषय पर फाइनमैन से बहुत आगे जाकर लेख लिख सकूंगा।
(२) मैं unified force theory को समझा सकूँगा।
(३) बल व ऊर्जा के स्वरूप व उनकी उत्पत्ति के रहस्य को सुलझा सकूँगा।
(४) जिन्हें संसार आज मूल कण मानता है, उनके मूल कण न होने तथा इनके निर्माण की पूर्ण प्रक्रिया को बहुत विस्तार से स्पष्ट कर सकूंगा। वर्तमान विज्ञान इस विषय में विचार भी नहीं कर पा रहा है अथवा कर रहा है।
(५) विभिन्न मूल कणों व क्वाण्टाज् की संरचना, स्वरूप व व्यवहार के अज्ञात रहस्यों को उद्घाटित कर सकूंगा।
(६) मैं कणों व क्वाण्टाज् की द्वैत प्रकृति की वैदिक व्याख्या कर सकूँगा।
(७) ब्लैक होल के स्थान पर विश्वविख्यात भारतीय खगोलशास्त्री डॉ. मित्रा साहब के ई.सी.ओ. मॉडल से मेरा ऐतरेय विज्ञान भी सहमत है। मैं इस विषय में विचार लिख सकूंगा।
(८) सृष्टि निर्माण की प्रक्रिया को वर्तमान किसी सिद्धान्त से आगे ले जाकर विस्तार से अनादि मूल पदार्थ से लेकर तारों के निर्माण तक के विषय में भी विस्तार से लिख सकूंगा।
(६) डार्क इनर्जी जिसे बिग बैंग के लिए उत्तरदायी माना जाता है, के दूसरे स्वरूप जिसमें बिग बैंग नहीं बल्कि अनेक विस्फोट सदैव होते रहते हैं, सृष्टि की हर क्रिया में उसकी भूमिका को दर्शा सकूंगा। मेरी डार्क एनर्जी वर्तमान विज्ञान द्वारा कल्पित डार्क इनर्जी से भिन्न होगी।
(६) विभिन्न गैलेक्सियों सौर मण्डलों में तारों व ग्रहादि लोकों के परिक्रमण का प्रारम्भ व इनके गुप्त विज्ञान को विस्तार से प्रकाशित कर सकूंगा।
(१०) वर्तमान विज्ञान में कल्पित वैक्यूम इनर्जी के रूप में एक अन्य लगभग सर्वव्यापक ऊर्जा के स्वरूप को बतला सकूंगा।
(११) सृष्टि विज्ञान, खगोल विज्ञान एवं कण भौतिकी के अनेक रहस्यमय बिन्दुओं पर प्रकाश डाल सकूंगा।
(१२) स्पेस, गुरुत्व, काल के रहस्यमय स्वरूप वा उत्पत्ति प्रक्रिया को स्पष्ट कर सकूंगा।
(१३) इन सब कार्यों के लिए ईश्वर नामक चेतन, सर्वव्यापक व सर्वज्ञ, निराकर व सर्वशक्तिमयी सत्ता की अनिवार्यता को भी सिद्ध कर सकूंगा।
(१४) ईश्वर के स्वरूप, उसकी कार्यशैली के वैज्ञानिक स्वरूप को स्पष्ट कर सकूँगा।
(१५) वेद मंत्र इस ब्रह्माण्ड में सर्वत्र व्याप्त विशेष प्रकार की तरंगों के रूप में ईश्वरीय रचना हैं, ये मंत्र किसी भी अन्य ग्रन्थ के समान नहीं है। इसे भी सिद्ध कर सकूंगा।

(१६) मैं वैदिक मंत्रों रूपी vibrations के अद्भुत् स्वरूप के द्वारा समस्त सृष्टि के उत्पन्न होने में महान् व गुप्त विज्ञान को प्रकाशित करके वेद तथा वैदिक संस्कृत भाषा की सार्वत्रिकता व शाश्वतता सिद्ध करके ब्रह्माण्ड विज्ञान के कई अनसुलझे रहस्यों को खोल सकूँगा, इससे वेद व ऋषि मुनियों पर साम्प्रदायिकता का मिथ्या कलंक सदा के लिए मिट जाएगा।
(१७) मैं सत्यधर्म व कल्याणकारी भौतिक विज्ञान का पारस्परिक अभेद सिद्ध करके संसार को इनकी ओर ही बढ़ने का आह्वान कर सकूंगा।
(१८) मैं भारतीय संस्कृति, सभ्यता के प्रति घृणा वा उपेक्षा का भाव रखने तथा विभिन्न विदेशी सभ्यताओं के दास बनकर अभिव्यक्ति वा निजी जीवन की स्वतंत्रता के नाम पर उच्छ्रंखल बनी युवा पीढ़ी, मीडिया वा कथित प्रबुद्ध वर्ग की दूषित वा रुग्ण मानसिकता की चिकित्सा करके भारतीय संस्कृति सभ्यता की महती वैज्ञानिकता समझा कर प्राचीन भारतीय गौरव की रक्षा कर सकूंगा।

मुझे आशा है कि मेरा ऐतरेय ग्रन्थ का वैज्ञानिक व्याख्यान ही मेरे व्रत को पूर्ण करने का समर्थ साधन बनेगा और सृष्टि के रहस्यों को खोजने के इच्छुक विश्व के महान् वैज्ञानिक आगामी कुछ दशक तक मेरे व्याख्यान पर शोध करते रह सकेंगे। परन्तु इस कार्य के लिये ईश्वरीय कृपा, उत्तम स्वास्थ्य, आप सबका सर्वात्मना सहयोग तथा ईमानदार महान् वैज्ञानिकों की आत्मीयता भी अति आवश्यक है। इसके सहारे मेरा लक्ष्य पूर्ण होगा ही, यह आशा करता हूँ। अति उच्च स्तरीय भौतिक वैज्ञानिकों से मेरी अपेक्षा यह है कि वे मुझे वर्तमान विकसित भौतिक विज्ञान में आ रही ऐसी समस्याओं, जिनका समाधान उन्हें नहीं सूझ रहा, की जानकारी निःसंकोच मुझे देने की कृपा करते रहें। मुझे आशा है कि उन समस्याओं का समाधान ऐतरेय ब्राह्मण व वेद आदि पर चिन्तन करके कुछ समय पश्चात् मैं दे सकूंगा। मैं उच्च स्तरीय प्रयोगशालाओं को देखने की भी महती इच्छा रखता हूँ, साथ ही वैज्ञानिकों से वर्तमान भौतिकी के मूलभूत सिद्धान्तों को समझने की भी उत्कृष्ट इच्छा रखता हूँ। इससे भी मेरे काम को गति मिल सकेगी। **हम और आधुनिक भौतिक वैज्ञानिक परस्पर विरोधी, प्रतिस्पर्धी नहीं बल्कि पूरक व मित्र बनकर धर्म को वैज्ञानिक आधार तथा विज्ञान को कल्याण व शान्ति का साधन बना सकते हैं।** ऐतरेय ब्राह्मण पर मेरे व्याख्यान के पूर्ण होने तक (लगभग दो वर्ष) मैं उसके विज्ञान पर कुछ भी कहना नहीं चाहूँगा क्योंकि मैं जिस प्रक्रिया पर चल रहा हूँ उस पर चलने वाला विश्व भर में सम्भवतः मैं अकेला ही हूँ। मेरा न तो कोई मार्गदर्शक है और न सुस्पष्ट कोई साहित्य वा परम्परा विश्वभर में दिखाई देती है। इस कारण मुझे शान्ति से पढ़ने व मनन करने दिया जाये। मेरा भाष्य पूर्ण होने पर प्रतिदिन वैज्ञानिकों के साथ सर्वत्र चर्चा करना ही एक मात्र कार्य रह जायेगा और अनेक नवीन क्षेत्रों में प्रयोगों का मार्ग खुल जायेगा। मैं अपना कार्य पूर्णतः निष्कामभाव से सर्व संसार के हितार्थ कर रहा हूँ। मेरे जीवित रहने का केवल यही एकमात्र उद्देश्य रह गया है, अन्य कोई इच्छा इस संसार में शेष नहीं है।

प्यारे भाइयो? मेरे हृदय में तीव्र इच्छा सदैव यह भी रहती है कि **संसार का प्रत्येक मानव सत्य का प्रबल पक्षधर व अन्वेषक बने। यदि ऐसा न कर सके तो सत्य अन्वेषण में स्वसामर्थ्यानुसार सहयोग तो करे ही। यदि सहयोगी भी नहीं बन सके तो कम से कम किसी पूर्वाग्रह, दुराग्रह, पद-प्रतिष्ठा धन की लालसा में अथवा अनेकता में एकता की भ्रान्त धारणा, कल्पित भ्रान्त मानवता, मिथ्याधारित राष्ट्रियता, मिथ्या सैक्यूलरिज्म के वशीभूत होकर सत्य का विरोधी तो नहीं बने। प्रत्येक मानव को यह बात हृदय की गहराइयों तथा मस्तिष्क के चिन्तन की ऊँचाइयों से विचारनी चाहिए कि सत्य धर्म तथा विज्ञान दोनों की ही कोई भौगोलिक सीमा नहीं होती है। तब नस्ल, भाषा, वर्ग, सम्प्रदाय का भेद तो नितान्त भ्रामक कल्पना है।** यद्यपि मैं यह स्वीकारता हूँ कि कुछ बातें देश काल परिस्थिति के अनुसार बदल भी जाती हैं, परन्तु इसी तर्क पर भिन्न-भिन्न परस्पर विरुद्ध विचारों को सत्य मान लेना सत्य के साथ घोर अन्याय है। ईश्वर के नियम सार्वदेशिक, शाश्वत तथा सर्वहितकारी होते हैं। ईश्वर एक है, उसकी व्यवस्थायें भी एक ही हैं, चाहे वे भौतिक क्षेत्र में हों अथवा आध्यात्मिक क्षेत्र में। उन्हें ही सत्य धर्म तथा वास्तविक विज्ञान कहा जा सकता है और उसी सत्यमार्ग पर मानव मात्र को प्रवृत्त करना मेरा ध्येय है। मैं संसार भर के विद्वानों, वैज्ञानिकों, दार्शनिकों व धर्मानुरागियों के स्नेह व सहयोग का अभिलाषी हूँ। इसके साथ ही मैं विश्वभर के प्रबुद्धजनों, प्यारे छात्र-छात्राओं, पत्रकारों, शिक्षाविदों, समाज-शास्त्रियों, अर्थ-शास्त्रियों, राजनेताओं, उद्योगपतियों, व्यापरियों, कृषकों, श्रमिकों, नास्तिकों, साम्यवादियों या अन्य किसी भी क्षेत्र के प्रतिभाशाली युवाओं का आह्वान करता हूँ कि मेरे विचारों व उद्देश्य पर एक बार शान्त व निष्पक्ष हृदय एवं प्रखर तार्किक मस्तिष्क से गम्भीरता से विचार करें। यदि उनके निष्पक्ष आत्मा को यह मार्ग सत्य व हितकारी प्रतीत होवे तो अपने-अपने ढंग से यथेष्ट प्रचार वा सहयोग करें व करावें।

आइये! मेरे विश्व भर के मित्रजनो। हम सब मिलकर इस पृथिवी को परमात्मा का एक परिवार मानकर वेद के शब्दों में कहें–

संगच्छध्वं संवदध्व............. समानो मंत्रः समितिः।

समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्..................(ऋग्वेद १०.१६१.१-२)

अर्थात् हम सब मानव प्राणिमात्र के कल्याणार्थ साथ-साथ चलें, समान विचार वाले बनें, हमारी मन्त्रणायें, सभायें, मन, चित्त,हृदय सभी समान भाव रखने वाले हों। कोई भी परस्पर विरोधी न रहे, जिससे संसार में सर्वत्र शान्ति, आनन्द, भातृभाव का सुखद साम्राज्य होवे।

इन्ही कामनाओं व भावनाओं एवं आपके सर्वात्मना सहयोग की आशा के साथ.....

सत्य धर्म व विज्ञान के पथ का पथिक

आषाढ़ शुक्ला पंचमी वि.सं. २०७२ — आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

21 जून 2015, रविवार — श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास

(वैदिक एवं आधुनिक भौतिक विज्ञान शोध संस्थान)
वेद विज्ञान मन्दिर, भागलभीम
भीनमाल, जिला-जालोर (राजस्थान) पिन- ३४३०२६
दूरभाष- 09414182173, 02969 292103

विनम्र निवेदन

मान्यवर! आशा है कि आपने इस पुस्तिका को ध्यान से पढ़कर आचार्य जी के कार्य और महत्ता को भली प्रकार समझ लिया होगा, ऐसी आशा करते हैं। यदि आपके हृदय और मस्तिष्क वेद के इस अपूर्व कार्य के लिए उत्सुक हुए हों और हमें अपना सहयोग करना चाहें तो आप हमारे यज्ञ में निम्न प्रकार से सहयोगी बन सकते हैं–

1. प्रतिवर्ष न्यूनतम 12,000/– रूपये अथवा एक बार न्यूनतम एक लाख रूपये का दान करके सहयोगी संरक्षक बन सकते हैं। आपको न्यास की वार्षिक बैठक में जो प्रायः वार्षिकोत्सव के अवसर पर हुआ करेगी, में विशेष अतिथि रूपेण आमन्त्रित किया जाता रहेगा।
2. प्रतिवर्ष न्यूनतम 6,000/– रूपये अथवा एक साथ न्यूनतम 50,000/– रूपये देकर विशेष आमन्त्रित सदस्य बन सकते हैं। आपको भी वार्षिक बैठक के अवसर पर अतिथि रूपेण आमन्त्रित किया जाता रहेगा।
3. वार्षिक न्यूनतम 1,000/– रूपये अथवा एक सौ मासिक देते रहकर सहयोगी सदस्य बन सकते हैं।
4. अपने नाम से कमरा आदि बनवा सकते हैं।
5. अपने किसी परिजन की स्मृति में अथवा यों ही स्थिर निधि में धन जमा करा सकते हैं, जिसके ब्याज का उपयोग न्यास करता रहे। जब तक न्यास ब्याज का उपयोग करेगा तब तक यदि स्थिर निधि सहयोगी संरक्षक वा विशेष आमंत्रित के बराबर है, तो आपको भी उसी श्रेणी का सदस्य माना जायेगा।

   नोट– उपर्युक्त सभी सहयोगी महानुभावों को न्यास की C.A. द्वारा की हुई वार्षिक ऑडिट रिपोर्ट भेजी जाया करेगी। जो महानुभाव स्वयं दान नहीं कर सकें वे दूसरों को प्रेरित करके कम से कम 8 सदस्य आदि बनाकर स्वयं निःशुल्क उसी श्रेणी के सदस्य वा सहयोगी संरक्षक आदि बन सकते हैं।
6. वयोवृद्ध विद्वान्, संन्यासी, साधु, महान् वैज्ञानिक महानुभाव अपना आर्शीवाद तथा बौद्धिक सहयोग दे सकते हैं।
7. विद्यार्थी, किसान, श्रमिक, व्यापारी आदि अपनी पवित्र आहुति श्रद्धा व सामर्थ्य के अनुसार सहयोग कर सकते हैं। आई. आई. टी., इंजीनियरिंग व विज्ञान के उच्च शिक्षा वा शोध स्तर के छात्र अपना बौद्धिक सहयोग भी दे सकते हैं।

विशेष निवेदन

यह कार्य अत्यन्त पवित्र है, इस कारण आचार्य श्री की भावनानुसार विनम्र निवेदन है कि **जिनकी आजीविका किसी भी प्रकार की हिंसा, चोरी, तस्करी, अश्लीलतावर्धक साधनों, नशीली वस्तुओं की विक्री, धोखाधड़ी, शोषण आदि पर निर्भर हो तथा जो निर्धन भाई अपनी सामर्थ्य से अधिक (अथवा अपने परिवार**

में क्लेश करके) दान देना चाहते हों, ऐसे महानुभावों की सद्भावना का धन्यवाद करते हुए भी हम उनका दान लेने में असमर्थ हैं। कृपया ऐसा करने का प्रस्ताव करके हमें लज्जित न करें। हाँ, जो बन्धु ऐसे कर्मों को त्यागकर हमसे जुड़ना चाहें, तो उनका हार्दिक स्वागत है।

कृपया आप अपना चैक/ड्राफ्ट/धनादेश, **''प्रमुख, श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास'' PAN No. AAATV7229A** के नाम (केवल खाते में देय) भेजने का कष्ट करें, साथ ही अपना नाम व पता साफ अक्षरों में लिखकर अवश्य भेजने की कृपा करें। **पंजाब नैशनल बैंक, शाखा– भीनमाल, IFS Code : PUNB0447400, खाता सं.– 4474000100005849 अथवा स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर, शाखा– भीनमाल, खाता सं– 61001839825** में ऑन लाइन भी आप धन जमा करवा सकते हैं परन्तु ऐसा करने वाले **महानुभाव अपना नाम व पता दूरभाष द्वारा तत्काल सूचित करने का कष्ट करें,** जिससे समय पर रसीद भेजी जा सके, अन्यथा हमें बहुत कठिनाई होती है।

नोट– न्यास को दिया हुआ दान आयकर अधिनियम की धारा 80–जी के अन्तर्गत कर मुक्त है।

निवेदक

श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास

(वैदिक एवं आधुनिक भौतिक विज्ञान शोध संस्थान)

वेद विज्ञान मन्दिर, भागलभीम

भीनमाल, जिला–जालोर

(राजस्थान) पिन– 343029

दूरभाष– 09829148400,07742419956, 02969 292103

Website : www.vaidicscience.com

E-mail : swamiagnivrat@gmail.com